समावेशी शिक्षा के उद्देश्य :-

समावेशी शिक्षा को वर्तमान समय मे व्यापक रूप से स्वीकार किया जा रहा है। इसके अन्तर्गत उन सभी उद्देश्य को समाहित किया गया है जो विशेष बालको के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है। अतः समावेशी शिक्षा के निम्न उद्देश्य हैं-

* समावेशी शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य शारीरिक दोषयुक्त बालकों की आवश्यकता को पहचान कर निर्धारण करना है।
* अक्षमतायुक्त बालकों के सीखने की समस्याओं को ध्यान मे रखकर शैक्षिक वातावरण प्रदान करना जिससे कि प्रत्येक छात्र शिक्षण अधिगम प्रक्रिया मे सक्रिय रूप से भाग ले सके तथा अधिगम स्तर को उच्च बना सके।
* समावेशी शिक्षा मे सीखने की प्रक्रिया मे उत्पन्न होने वाली प्रमुख बाधाओं का निराकरण किया जाता है। ये बाधाये पाठ्यक्रम, शिक्षक, शिक्षण विधि तथा समुदाय आदि हो सकता है।
* समावेशी शिक्षा के द्वारा पाठ्यक्रम के दोषो को दूर किया जाता है जिससे कि सामान्य तथा अक्षमता से ग्रसित बालकों की आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके।
* समावेशी शिक्षा का उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है जिसके लिए सरकारी तंत्र गैर सरकारी तंत्र और समुदाय का सहयोग प्राप्त किया जाता है।
* 0 से 6 आयु वर्ष के बालको की विशिष्ट

आवश्यकताओं को पहचान कर उसके अनुसार शिक्षा की व्यवस्था करना है।

* 6 से 14 आयु वर्ष के बालकों के सर्वांगीण विकास हेतु विशेष उपकरणों की व्यवस्था करके अभिगम स्तर को उच्च बनाना होता है।
* 14 से 21 आयु वर्ग के वे व्यक्ति जो किन्हीं कारणों से शिक्षा की मुख्य धारा से अलग हो गये हैं उन्हें उचित शिक्षा व्यवस्था उपलब्ध कराना समावेशी शिक्षा का उद्देश्य है।